ज़रूरतमन्द का खयाल रखना

मौलाना जलील अहसन नदवी रह.

राहे अमल हिन्दी 'रसूलुल्लाहﷺ के साथियो का हाल'.

‘नोट:- हदीष की रिवायत का खुलासा है.’

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

*बुखारी व मुस्लिम, रावी हज़रत अबू हुरैरा रदी.

एक आदमी रसूलुल्लाहﷺ के पास आया और कहा, में भूक और फाका से बेचैन हूं, तो आपﷺ ने एक आदमी को अपनी किसी बीवी के पास भेजा की देखो अगर कुछ हो तो लावो, उन्होने जवाब दिया की पानी के अलावा इस वकत कुछ नही हे. फिर दूसरी बीवी के पास भेजा, वहा से भी यही जवाब मिला, यहा तक की तमाम बीवियो ने यही कहा की कसम हे उस ज़ात की जिसने आपको हक देकर भेजा हे हमारे यहा पानी के अलावा कुछ नही हे तब आपﷺ ने लोगो से कहा की आज रात कौन इस मेहमान को खिलाता हे? अन्सार में से एक आदमी ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल! में खिलाउंगा. तो वो मेहमान को लिए अपने घर गए और बीवी से कहा ये आपﷺ के मेहमान हे इनकी खातिर करो, क्या तुम्हारे पास

कुछ हे? उन्होने कहा नही, सिर्फ बच्चो का खाना मौजूद हे और उन्होने खाया नही हे.

अन्सारी ने कहा की उनको कुछ देकर बहला दो, और जब खाना मांगे तो उन्हे थपक कर सुला दो और जब मेहमान अन्दर खाना खाने आए तो चिराग बुझा देना, और कुछ ऐसा करना जिस से मेहमान ये समझे की ये लोग भी खाने में शरीक हे, चुनाचे सब लोग खाना खाने बैठे, मेहमान तो पेट भर कर उठा, लेकिन इन दोनो ने भूखे रेहकर रात गुजारी जब सुब्ह को ये साहब आपﷺ के पास पोहचे तो आपﷺ ने फरमाया, तुम दोनो मिया बीवी ने मेहमान के साथ रात जो सुलूक किया उससे अल्लाह तआला बहुत खुश हुवा. ये शख्स जो आया था फाका से था और भूख से बेचैन था, इसलिए बच्चो पर उसको महानता दी गई, क्युंकी बच्चो को थोडा देकर बहला दिया गया था, वो सुब्ह तक भूख से मर ना जाते और मेहमान को महानता देना जरूरी भी था, लेकिन ये वो ही कर सकता हे जिस के अन्दर ईसार व कुर्बानी की सिफत पाई जाती हे, इस पहलू से ये ईसार का बेहतरीन नमूना हे की आदमी के पास अपनी ही ज़रूरत भर खाना हे लेकिन फिर भी अपने से ज़्यादा ज़रूरतमन्द का खयाल रखता हे, खुद भूखा रेहता हे और गरीब भूके का पेट भरता हे.